B.A.LL.B. 2nd Year IV Semester
History : Unit-V

भारतीय समाज की समस्याएं
Problems of Indian Society

क्षेत्रवाद– क्षेत्रवाद का तात्पर्य एक ऐसे क्षेत्र से होता है जिसको व्यक्ति विशेष महत्व देता है और उसी क्षेत्र के विकास के विषय में सोचता है। सारे लाभ एक विशेष क्षेत्र के लोगां को देना चाहता है। ये अधिकतर देखने को मिलता है कि जब व्यक्ति किसी प्रशासनिक पद पर या राजनीतिक पद पर विराजमान होता है तो ऐसा करता है और ऐसा न करने को रोकने के लिए अपने को रोक नही पाता।

राजनीतिक पद पर आसीन होना– जब कोई व्यक्ति राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हो जाता है किसी विशेष क्षेत्र के कारण उस व्यक्तिको राजनीतिक दृष्टि से प्रमुख पदाधिकारी या सत्ता पक्ष के माध्यम से मंत्री पद प्राप्त कर लेता है तो वह ऐसी स्थिति में सोचता है कि जिस क्षेत्र के कारण मैंने यह पद प्राप्त किया है, उस क्षेत्र के लिये विशेष लाभ देने है और ऐसी स्थिति में वह सम्पूर्ण देश के विकास को छोड़कर एक विशेष क्षेत्र के विकास पर जोर देता है और लाभ की जितनी भी योजनायें है उन सभी योजनाओं को व्यक्ति अपने ही क्षेत्र में देना चाहता है, जो देश के लिये हानिकारक है।

यदि हम अपने देश के पिछले इतिहास का अध्ययन करें तो इस प्रकार के बहुत सारे उदाहरण देखने को मिल जाते है जैसे राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार में लालू प्रसाद यादव को जब रेल मंत्रो बनाया गया था तो रेलवे की अधिकांश योजनाओं को बिहार में ही लागू किया गया और बिहार के भी के विशेष क्षेत्र में, यहाँ तक कि लालू प्रसाद यादव ने अपने गाँव से लेकर अपनी ससुराल के गाँव तक रेलवे लाईन को बिछवाया। जिसकी जरूरत नही थी। यदि रेलवे का विस्तार एक ऐसे क्षेत्र में होता जहाँ जरूरी था तो देश का विकास भी होता। उस समय रेलवे का विस्तार जितना बिहार में हुआ उतना सम्पूर्ण देश में नही हो पाया।

इसी प्रकार हम देखते है कि एनडीए की सरकार में अटल बिहारी वाजेपयी जी ने सरकार बनायी तो उनकी सरकार में ममता बनर्जी रेल मंत्री बनी तो उन्होंने भी बंगाल के अन्दर रेलवे की योजनाओं को क्रियाविन्त किया। इसका आधा भी कार्य देश के अन्य भागों में नही किया गया। जो देश के लिये हानिकारक है। यदि देश क ऐसे भागों पर काम किया जाता जिन पर किया जाना जरूरी था जबकि ऐसा नही हुआ।

इसी प्रकार से नितिश कुमार भी जब भारत सरकार में रेल मंत्री बने तब उनका कार्य भी सिर्फ और सिर्फ बिहार तक ही सीमित रहा। अतः इसी प्रकार से अन्य मंत्रियों की भी यही प्रणाली रही। ऐसी स्थिाति में देश के अन्य भाग विकास के कार्य से अछूते रहे, जो देश के लिये हानिकारक हैं। इस प्रकार की कार्य प्रणाली से दूसरे लोगों में क्षेत्र के प्रति पक्षपात की भावना उत्पन्न होती है और ऐसी स्थिति में देश का विकास नही हो पाता। इस क्षेत्रवाद से देश का विकास रूक जाता है।

प्रशासनिक पद पर आसीन होना– जब कोई व्यक्ति किसी विशेष पद पर आसीन हो जाता है तो वह अपने क्षेत्र के लोगों को विशेष लाभ देना चाहता है। डा0 वेद प्रकाश से पहले यू0जीसी0 के चैयरमैन आन्ध्र प्रदेश के थे, उनके समय में यू0जी0सी0 की जितनी भी फेलोशिप थी उनमें आधे से भी अधिक आन्ध्र प्रदेश के छात्रों को मिली थीं। लेकिन आधे से भी कम में शेष देश के छात्रों को मिली, जो देश के छात्रों से अन्याय हुआ। इसको क्षेत्रवाद कहा जाता है। जब किसी भर्ती बोर्ड का चैयरमैन किसी विशेष व्यक्ति को बनाया जाता तो विशेष क्षत्र के लोगों की भर्ती करता है और अन्य क्षेत्र के लागों के साथ अन्याय करता है।

इसी प्रकार से हम अन्य क्षेत्र में पक्षपात को देखते हैं। उत्तर प्रदेश में जब समाजवादी पार्टी की सरकार थी और इस सरकार में पुलिस भर्ती जब हुई तो इटावा, मैनपुरी व एटा के लोगों की सबसे अधिक भर्ती हुई थी। क्योंकि अधिकारियों को आदेश थे कि इन जिलों के लोगां को पुलिस में अधिक लेना है जोकि प्रदेश के अन्य लागों के साथ अन्याय हुआ। यह देश या प्रदेश के हित में नही था।

अतः इस प्रकार से हम देखते है कि ये जिस प्रकार से लोगों में क्षेत्रवाद की भावना पैदा होती जा रही है, जो देश के लिये हानिकारक है और देश के सम्पूर्ण विकास के लिये इस प्रकार से लागों से देश को बचाना है और इस प्रकार के लोग पदों पर पहुंचने चाहिए जिसके अन्दर राष्ट्रवाद की भावनाएं हों।

डा महिपाल सिंह
शिक्षण सहायक
विधि अध्ययन संस्थान,
चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।
मो0 नं0 – 9412547531
ई–मेलः mahikumud@gmail.com